



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

HQ

11/4/81

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 480]

नई दिल्ली, दुधनार, सितम्बर 7, 1988/भाद्र 16, 1910

No. 480]

NEW DELHI, WEDNESDAY, SEPTEMBER 7, 1988/BHADRA 16, 1910

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या की जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

उच्चो भूमि

(कम्पनी कार्य विभाग)

नई दिल्ली, 7 सितम्बर, 1988

आदेश

मा.का.पि. 909(अ) :—भारत सरकार के कम्पनी कार्य विभाग की गमनसमय पर जनरलीषित अधिसूचना मं. सा.का.नि. 143(अ), नारीब 18 अप्रूव, 1972 के माय पठित कर्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 227 की उपलब्ध (एक) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और आदेश से सा.का.नि. 553(अ), नारीब 7 अप्रूव, 1975 की अधिकान्त करते हुए, "सिवाए उन वार्ताओं के गवेंश में जिन्हें ऐसे अविकल्प के पूर्व दिया गया है या जो जी जाने से छोड़ दी गई है, श्रीर कर्पनीयों के आ वर्ग के संबंध में, जिसकी यह आदेश नाम होता है, और अन्य अनुरूपिक विषयों की वायत भारतीय चार्टर्ड एकाउण्टेंट संस्थान [जो चार्टर्ड एकाउण्टेंट अधिनियम, 1949 (1949 का 38) के अंतिम नियम दिया गया है] से प्राप्तयों करने के पश्चात्, कम्पनी विधि बोर्ड (मन्त्रियित आदेश करना है, अवश्य) —

1. संक्षिप्त नाम, नाम होता और प्रारम्भ

(1) इस आदेश का संक्षिप्त नाम विविधता और संस्करण कम्पनी (लेखापर्याप्त स्पोर्ट) आदेश, 1988 है।

(2) (क) यह प्रयोग किए जाने वाली कम्पनी को, जिसके प्रमाणित कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 591 में

गणिताग्नि विदेशी कम्पनी भी है, जो निम्नलिखित विवरणों में से पाक या अधिक में लगी हुई है या जगत की प्रमाणना करनी है, नाम होता, अवश्य —

- (1) विनियरण, खनन या प्रयोगन्तरण;
- (2) भेषार्ट कर्नल और इत्यता प्रदाय प्रयत्न;
- (3) व्यापार; और
- (4) विनियन, विनियान, विट फंड, नियि या पर्याप्तिक प्रनुविधा गोलाइटियों का कारबाह।

(ग) यह निम्नलिखित को नाम होती होता —

- (i) बैंकारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1950 का 10) की धारा 5 के खण्ड (ग) में पर्याप्त कार्ड विनायकी कम्पनी;
- (ii) कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 2(31) में परिभासित कीर्ति कीमा कम्पनी, और
- (iii) कोई सी कम्पनी, जिसे कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 25 के प्रशीत लाय प्रदने के तिथि अनुचित ही रहे हैं।

(3) यह 1 नवम्बर, 1988 को प्रवृत्त होता।

2. परिचायामः

इस आदेश में, —

(a) "पिट कंड", "निधि" वा "पारस्तातिक प्रतिवाद कम्पनी" में ऐसी कम्पनी श्रमिकों हैं जो किसी देश के भवित्वात् या अमेरिका के द्वारा में प्रशंसनीय वंचनाएँ या विवेदन के कारबाह में लागी हुई हैं, जिसके बारा अब अनेक अमिलात्रों के साथ इस प्रकार करते हैं कि उनमें से अपेक्षित निश्चित अवधि के लिए किसी कम्पनी निश्चित राशि का अभिदाय करेगा तबा तब अमेरिका अपनी ओर पर आंतरिक डाल कर या नीतिमाला द्वारा या किसी अन्य ऐसी रोति में जो कि करते हैं तब अपनी अवधारित की गई है तबा तब अपनी लोगों, तबा उसके अन्यथा भी कम्पनी आती है जिसका प्रधान आरबाह अपने सदस्यों से निम्न निपत्र सीकर करता और उन्हें अनु उधार देता है;

(b) "दिल्ली कम्पनी" में ऐसी कम्पनी श्रमिकों हैं जो किसी डिल्ली, बाणीपुर या कूपीय के, उचावर देकर या अभिदाय करके या अन्यथा, वित्तीय कारबाह में लागी हुई है और उसके अन्यथा, योर भी ऐसी कम्पनी आती है जो अब का पट्टा वित्त-पोषण और आवागत के वित्तगत के कारबाह में लागे हुई है;

(c) "विनियोग कम्पनी" से ऐसी कम्पनी श्रमिकों हैं जो केन्द्रीय या दिल्ली या अन्य सरकार द्वारा या किसी स्थानीय प्राविधिक द्वारा यारी किए गए जैसे, स्कॉलों, बंडलों, डिवेलपरों, इंडिस्ट्रील स्टाफों, जिनके प्रतीकात्मक भौतिक अवधारण के कारबाह या उनके द्वारा में लागे हुई हैं;

(d) "दिल्ली निवास" से ऐसी कम्पनी श्रमिकों हैं जो दिल्ली निवास, 1948 (1948 का 63) में परिवारित हिस्से विनियोग प्रक्रिया में लागी हुई है;

(e) "खाता उत्पत्ति" से ऐसी कम्पनी श्रमिकों हैं जो दिल्ली खाता के द्वारा है, और उत्तर या दूर १० करों ग्राम (जो उत्तर के पट्टेदार या अविस्तरी के लाल में हिला जाता का आवधारण करती है);

(f) "प्रसंस्करण कम्पनी" से ऐसी कम्पनी श्रमिकों हैं जो यमनी के प्रधार, विक्रय, परिदान या व्यवस्था को इलेक्ट्रो से उत्तर के प्रसंस्करण के कारबाह में लागी हुई है;

(g) "सेवा कम्पनी" से ऐसी कम्पनी श्रमिकों हैं जो दूपरों के कार्यों के लिए किसी सेवायों, सुविधायों, प्रकृतिवासी गारे और विदेशी प्रदाय वारंते, उत्तर वारंते उत्तर और उत्तर वारंते के कारबाह में लागी हुई है;

(h) "शपार कम्पनी" से ऐसी कम्पनी श्रमिकों हैं जो मन व पर और विक्रय के कारबाह में लागी हुई है।

3. नेत्रा परंपराक की लिंगों में वैरा ५ और पैरा ५ में विविरण विषय होते—लेखापरीक द्वारा परीक्षण प्राप्ति ऐसी कम्पनी के लेखायों के बारे में जिसको यह प्राप्ति लागू है, इस आदेश के गारंत पृष्ठ या उत्तर के प्रस्ताव किसी दिन को समाप्त होने वाले प्राप्ति लिंगों वर्ते के लिए, कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 227 के अधीन उसके द्वारा यो गई प्रत्येक लिंगों में वे विषय अन्वेषित होते हैं जो इन अधिसंकेतों के पैरा ५ और पैरा ५ में विविरित हैं।

4. नेत्रा परंपराक की लिंगों में सम्मिलित किए जाने वाले विषय:

जनन अनुरूप के, जिसको यह प्राप्ति लागू है, लेखायों के बारे में लेखापरीक को लिंगों में लिमिलित विषयों के बारे में कथन सम्मिलित होता है। अपर्याप्ति—

(क) निर्विराति, उन्नत और प्रांस्करण कम्पनी की दशा में—

(1) कम्पनी पूर्ण विशिष्टवा दर्शित करने के लिए समुचित अभिलेख रख रही है जिसके प्रत्यक्ष विमाण परिमाणात्मक और और विवर आस्तियों की स्थिति भी है, क्या उन नियत आस्तियों की प्रवर्त्तन मंडल द्वारा युक्तियुक्त अन्यथा पर प्रतिस्तव जांच नहीं गई है और यदि ऐसी जांच पर कोई तात्पर्य कम्पनी पाए गए है, और यदि ऐसा है तो क्या उनकी आवाज सेक्षान्यस्थियों में गमुचित कर्तव्याती कर सकी गई है;

(2) क्या नियत आस्तियों में से किसी का वर्ष के शेषानु पुनर्विधान कर लिया है, यदि ऐसा है क्यों पुनर्मूल्यांकन के आधार उपर्योग किया जाना चाहिए;

(3) क्या प्रवर्त्तन मंडल ने तीव्रा माल, भंडारों, फालवू युजों और फल्जों जामप्री के बारे में युक्तियुक्त प्रस्तरात्मक पर प्रतिस्तव जांच कर सकी है;

(4) क्या प्रवर्त्तन मंडल द्वारा स्टाक और अस्तिव जांच के लिए अमुखियत की जाने वाली प्रक्रियाएँ कम्पनी के आकार और उसके कारबाह की प्रकृति के संबंध में युक्तियुक्त और पर्याप्त हैं? यदि नहीं तो ऐसी प्रक्रियाओं में अपर्याप्तियों की शिपोर्ट की जानी चाहिए;

(5) क्या पुस्तक अभिलेखों से तुलना की जाएं पर ऐसी अस्तिव जांच पर, कोई साधिक कक्ष पाए गए हैं, तो क्या उनके बारे में लेखा-विषयों में समुचित कार्यवाली कर सकी गई है?

(6) क्या लेखा परीक्षक का स्टाक की परीक्षा के आधार पर अमावास हो गया है कि ऐसा मूल्यांकन आमावास: श्वीकृता लेखा निवासीं के अनुसार उचित और उपर्युक्त है? वह स्टाक के मूल्यांकन का आधार बही है, जो पूर्वीनी कांस में किया गया था; यदि मूल्यांकन के आधार, में कोई विवरण नहीं है तो ऐसे विवरण के प्रधार के बारे में, यदि तात्पर्य हो तो रिपोर्ट की जानी चाहिए.

(7) यदि कम्पनी में कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 301 के अधीन रखे गए रजिस्टर में सूचीबद्ध कम्पनियों, फमों या अन्य पक्षकारों से और/या कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 370 की उपाया (१५) के अधीन परिवारित उसी प्रवर्त्तन मंडल के प्रधीन की कम्पनियों से कोई प्रतिसूत या अप्रतिसूत उत्तर लिए हैं, तो क्या ऐसे अप्पों के बाज की दर और निवासन तथा शर्तें प्रथम दृष्ट्या कम्पनी के हिस्से पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली हैं;

(८) यदि कम्पनी में धारा 301 के अधीन रखे गए रजिस्टरों में सूचीबद्ध कम्पनियों, फमों या अन्य पक्षकारों से और/या कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 370 की उपाया (१५) के अधीन परिवारित उसी प्रवर्त्तन मंडल के प्रधीन की कम्पनियों की कोई प्रतिसूत या अप्रतिसूत उत्तर दिए हैं तो क्या ऐसे अप्पों के बाज की दर और निवासन और शर्तें प्रथम दृष्ट्या कम्पनी के हिस्से पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली हैं;

(९) क्या वे प्रधार, जिन्हें कम्पनी द्वारा उत्तर या उत्तरों की प्रकृति के अधिदाय दिए गए हैं, गुणधर्म की रूपीयों

का यथा अनुसन्धित स्वप्न में प्रतिसंदाय कर रहे हैं और व्याज का संवाद भी नियमित रूप से कर रहे हैं, और यदि नहीं, तो यथा कम्पनी ने मूलधन और व्याज की बहुती के लिए युक्तियुक्त उपाय किए हैं;

(10) यथा भांडारों, कच्ची सामग्री, जिनके अन्तर्गत भांडक, संपत्ति और सामग्री उपस्थित तथा अन्य आविष्कारों भी हैं, के क्षेत्र के लिए श्रीराम के विकास के लिए कम्पनी के आकार और उसके कारबाहर की प्रकृति के मनुष्य पर्याप्त आन्तरिक नियंत्रण प्रक्रिया विद्यमान है;

(11) यथा माल और सामग्रियों के क्षेत्र तथा माल, सामग्रियों और सेवाओं के विकास के संबंधहार, जो कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 301 के प्रधीन रखे गए रजिस्टर(रों) में प्रविष्ट की गई संविदाओं या उत्तराओं के मनुस्तरण में किए गए हैं और जो प्रत्येक पक्षकार के बारे में वर्ते के दौरान कुल मिलाकर 50,000 रुपए (पचास हजार रुपए) या उससे अधिक है, उन कीमतों पर किए गए हैं जो ऐसे माल, सामग्रियों, या सेवाएं के लिए विद्यमान व्याचार मूल्य को या उन कीमतों पर, जिन पर उसी प्रकार के माल या सेवाओं के लिए संबंधहार अन्य पक्षकारों के माल किए गए हैं, उत्तरान में रखते हुए युक्तियुक्त है;

(12) क्या किन्हीं अनुपमोंगी या अतिप्रस्तु भांडारों, कच्ची सामग्री या वैदार भाग का अवश्यार्थ किया गया है और क्या हानि के लिए, यदि कोई हो, कोई उपलब्ध लेखाओं में किया गया है;

(13) यदि कम्पनी ने जनता से निक्षेप स्वीकार किए हैं तो क्या भारतीय विवर्तीय द्वारा जारी किए गए निर्देशों का तथा कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 58-के उपबन्धों और उसके प्रधीन विवरित नियमों का, जहाँ वे लागू हों, अनुसालन किया गया है, यदि नहीं, तो उस्तरेंकों की प्रकृति का कथन करें;

(14) क्या कम्पनी आपनीय उपोत्पादों और स्कैमों के विकास और व्यवहार के लिए, जहाँ लागू हों, पूर्णतः अभिनेत्री रख रखे हैं;

(15) उन कम्पनियों के संबंध में, जिनकी संबंधित विचारीय अपेक्षा के प्रारम्भ में भासावत् पूँजी 25 लाख रुपए से अधिक है, या संबंधित विचारीय अपेक्षा के ठीक पूर्ववर्ती यथानाम तीन घोरों की अवधि के लिए अधिकतम अपेक्षा आवर्त्त 2 करोड़ रुपए से अधिक है, क्या कम्पनी की उसके आकार और उसके कारबाहर की प्रकृति के अनुसार कोई आन्तरिक लेखापरीक्षा पर्याप्त है;

(16) जहाँ केन्द्रीय सरकार ने कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 209 (1) (ए) के अधीन लागत अभिनेत्री का रखा जाना विद्युत किया है, वहाँ न्याएँ सेवा और अभिनेत्री यन्त्रण और रखे गए हैं।

(17) क्या कम्पनी अविष्य निधि श्रीरामचन्द्री राज्य योग्य शोषणों का समुचित प्राप्तिकारी के पाय नियेप नियमित स्वप्न से कर रहे हैं, और यदि नहीं, तो अविष्य निधि श्रीरामचन्द्री राज्य योग्य शोषणों की वकाया को मात्रा लेखापरीक्षक द्वारा उपदण्डित की जाएगी;

(18) क्या भाष्यनार, धन कर, नियेप कर, सीमानुस्क और उत्पादयुक्त के रुपमें सेवा की नियिनाद रकमें

जो उप लारेख ने, जिसी वे नियेप द्वारा छह मास से अधिक की अवधि के लिए संबंधित विचारीय वर्ष की मन्त्रिम तारीख को बताया थीं, यदि ऐसा है तो ऐसे व्याचार शीघ्र रामां की शिक्षाएं की जानी चाहिए;

(19) क्या धैर्यकात व्यय राजस्व नेत्रा पर भारित फिर पाए गए हैं; यदि ऐसा है तो उनके शोरां को रिपोर्ट की जानी चाहिए;

(20) क्या कम्पनी यथा श्रीरामचन्द्री कम्पनी (विशेष उपर्याप्त) अधिनियम, 1985 (1986 का 1) की धारा 3 का उपधारा (1) के बाएँ (ग) के अविवर्तित रूप श्रीरामचन्द्री कम्पनी है; यदि ऐसा है तो क्या उत्तर अधिनियम की धारा 15 के प्रधीन श्रीरामचन्द्री और विनोद उत्तरार्थी थोर्ड को गोई तिरंगे फिर गया है।

(ग) सेवा कम्पनी की दशा में—

(1) छण्ड (क) में विविधिष्ट गतों द्वारा उत्तरार्थी नक जहाँ तक वे लागू हैं;

(2) क्या कम्पनी के पाय नामियों और भांडारों की प्राप्तियाँ, रिपोर्ट और डांगों अधिनियमिका करने की, और संबंधित योग्यों में जाभोर योगी गई नामियों को जारीटिन करने की उसके आकार और उसके कारबाहर की प्रकृति के अनुसार, युक्तियुक्त पद्धति है;

(3) क्या कम्पनी के पाय उपके आकार और उसके कारबाहर की प्रकृति के अनुहा संबंधित योग्यों में लागू रहे अवधि घंटों के आवंटा की कोई उत्तरार्थी पद्धति है;

(4) क्या भांडारों ने जर्नी किए जाने और योग्यों के लिए भांडारों और अप के अविंटर पर समुचित हस्तों पर प्राप्तिगण को युक्तियुक्त पद्धति श्रीरामचन्द्री के आकार और उसके कारबाहर की प्रकृति के अनुसार कोई आन्तरिक नियमित गति पद्धति विद्यमान है।

(ग) व्यापारी घमनी की दशा में—

(1) छण्ड (क) में विविधिष्ट सभी विवार, उत्तरार्थी नक जहाँ तक वे लागू हैं;

(2) क्या अधिग्रस्त योग का प्रवाचारण किए गया है श्रीरामचन्द्री माल का मूल्य महत्वपूर्ण है तो क्या हानि के लिए उत्पन्न दिया गया है;

(3) वित्त, विनियायन, चिट फंड, निधि आंतरिक प्रशुविधा कम्पनी की दशा में—

(1) छण्ड (क) में विविधिष्ट सभी विवार, उत्तरार्थी नक जहाँ तक वे लागू हैं;

(2) क्या उस मामले में, जिसमें कम्पनी ने घोरों, डिवेन्वरों और अन्य प्रतिमूलियों की विवारी के स्वप्न में प्रतिमूलि के आवार पर उधार और अधिवाद दिए हैं, पर्याप्त इकायेज और प्रभिनेत्री न्यू गए हैं;

(3) क्या चिट फंड, निधि आंतरिक प्रशुविधा योसाहटी को लागू कियी विवेप कानून के उत्पन्नों का सम्बन्ध अनुपालन किया गया है;

(4) यदि कम्पनी नेपरों, प्रतिमूलियों, डिवेन्वरों और अन्य नियिनां का नेत रेत या व्याचार करती है तो क्या

नियंत्रण और संविदारों के मनुचिन अधिकार यही गण हैं और क्षा उनमें समय पर प्रविधियों की गई हैं, और क्षा कम्पनी ने लेखन, प्रतिभूतियां, विवेचन और अन्य विनियोग अपने ही ताम में, उस छट के, यदि कोई हो। विस्तार तक के विवाद धारण किए हैं, जो कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 49 के अधीन ही गई है।

5. अननुकूल या विशेषित उत्तरों के लिए कारणों का कथन किया जाएगा—जहां लेखापरीक्षक की रिपोर्ट में, धारा 4 में लिंगिष्ट प्रश्नों में से किसी का उत्तर अननुकूल या विशेषित है, वहां लेखापरीक्षक की रिपोर्ट में, दस्तावेदि, ऐसे अननुकूल या विशेषित उत्तर के लिए कारणों का कथन भी किया जाएगा। जहां लेखापरीक्षक किसी विशिष्ट प्रश्न के उत्तर कोई रूप अपने में असमर्थ है, वहां उसकी रिपोर्ट में वह तथ्य इस वाज के कारणों सहित उत्तरानि किया जाएगा कि उसके लिए ऐसे प्रश्न का उत्तर देना वर्ती सम्भव नहीं है।

[फाइल स. 12/5/86--सो. एल. 5]
एस. कमार सदस्य, कम्पनी विधि बोर्ड

MINISTRY OF INDUSTRY

(Department of Company Affairs)

New Delhi, the 7th September, 1988

ORDER

G.S.R. 909(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (4A) of section 227 of the Companies' Act, 1956 (1 of 1956), read with the Notification of the Government of India in the Department of Company Affairs, No. GSR 113(E) dated the 18th October, 1972 as amended from time to time and in supersession of the order No. GSR 568 (E) dated the 7th November, 1975 except as regards things done or omitted to be done before such supersession, and after consultation with the Institute of Chartered Accountant of India (constituted under the Chartered Accountants Act, 1949 (38 of 1949)), in regard to class of companies to which this order applies and other ancillary matters, the Company Law Board hereby makes the following Order, namely:—

1. Short title application and commencement.—

(1) This Order may be called the Manufacturing and Other Companies (Auditor's Report) Order, 1988.

(2) (a) It shall apply to every company including a foreign company as defined in Section 591 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956) which is engaged or proposes to engage in one or more of the following activities namely:—

- (i) Manufacturing, mining or processing;
- (ii) supplying and rendering services;
- (iii) trading; and
- (iv) the business of financing, investment, chit fund, nidhi or mutual benefit societies.

(b) It shall not apply to

- (i) a banking company as defined in clause (c) of section 5 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949);
- (ii) an insurance company as defined in section 2(21) of the Companies' Act, 1956 (1 of 1956); and
- (iii) a company licensed to operate under section 25 of the Companies' Act, 1956 (1 of 1956).

(3) It shall come into force on the 1st day of November, 1988.

2. Definitions :

In this Order:—

- (a) 'Chit fund', 'nidhi' or 'mutual benefit' company means a company engaged in the business of managing, conducting or supervising as a foreman or agent of any transaction or arrangement by which it enters into an agreement with a number of subscribers that every one of them shall subscribe a certain sum of instalments for a definite period and that each subscriber, in his turn, as determined by lot or by auction or by tender or in such other manner as may be provided for in the agreement, shall be entitled to a prize amount, and includes companies whose principal business is accepting fixed deposits from, and lending money to, members;
- (b) "finance company" means a company engaged in the business of financing, whether by making loans or advances or otherwise, of any industry, commerce or agriculture and includes any company engaged in the business of hire-purchase, lease financing and financing of housing;
- (c) "investment company" means a company engaged in the business of acquisition and holding of, or dealing in, shares, stocks, bonds, debentures, debenture stocks, including securities issued by the Central or any State Government or by any local authority, or in other marketable securities of a like nature;
- (d) "manufacturing company" means a company engaged in any manufacturing process as defined in the Factories Act, 1948 (63 of 1948);
- (e) "mining company" means a company owning a mine, and includes a company which carries on the business of a mine either as a lessee or occupier thereof;
- (f) "processing company" means a company engaged in the business of processing materials with a view of their use, sale, delivery or disposal;
- (g) "Service company" means a company engaged in the business of supplying, providing, maintaining and operating any services;

facilities, conveniences, bureaux and the like for the benefit of others;

(h) "trading company" means a company engaged in the business of buying and selling goods.

3. Auditor's report to contain matters specified in paragraphs 4 and 5 :

Every report made by the auditor under section 227 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956) on the accounts of every company examined by him to which this Order applies for every financial year ending on any day on or after the commencement of this Order, shall contain the matters specified in paragraphs 4 and 5.

4. The matters to be included in the Auditor's Report :

The Auditor's Report on the accounts of a company to which this Order applies shall include a statement on the following matters, namely :—

(A) In the case of manufacturing, mining or processing company :—

- (i) Whether the company is maintaining proper records showing full particulars, including quantitative details and situation of fixed assets; whether these fixed assets have been physically verified by the management at reasonable intervals; whether any material discrepancies were noticed on such verification and if so, whether the same have been properly dealt with in the books of account;
- (ii) whether any of the fixed assets have been revalued during the year; if so, the basis of revaluation should be indicated;
- (iii) whether physical verification has been conducted by the management at reasonable intervals in respect of finished goods, stores, spare parts and raw materials;
- (iv) Are the procedures of physical verification of stocks followed by the management reasonable and adequate in relation to the size of the company and the nature of its business? If not, the inadequacies in such procedures should be reported;
- (v) whether any material discrepancies have been noticed on physical verification of stocks as compared to book records, and if so, whether the same have been properly dealt with in the books of account?
- (vi) whether the auditor, on the basis of his examination of stocks, is satisfied that such valuation is fair and proper in accordance with the normally accepted accounting principles? Is the basis of valuation of stocks same as in the preceding year? if there is any deviation in the basis of valuation, the effect of such deviation, if material, should be reported;

(vii) if the company has taken any loans, secured or unsecured, from companies, firms or other parties listed in the register maintained under section 301 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), and/or from the companies under the same management as defined under sub-section (1B) of section 370 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), whether, the rate of interest and other terms and conditions of such loans are *prima facie* prejudicial to the interest of the company;

(viii) if the company has granted any loans, secured or unsecured, to companies, firms or other parties listed in the register (s) maintained under section 301 and/or to the companies under the same management as defined under sub-section (1B) of section 370 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), whether the rate of interest and other terms and conditions of such loans are *prima facie* prejudicial to the interest of the company;

(ix) whether the parties to whom the loans, or advances in the nature of loans, have been given by the company are repaying the principal amounts as stipulated and are also regular in payment of the interest and if not whether reasonable steps have been taken by the company for recovery of the principal and interest;

(x) is there an adequate internal control procedure commensurate with the size of the company and the nature of its business, for the purchase of stores, raw materials, including components, plant and machinery, equipment and other assets, and for the sale of goods;

(xi) whether the transaction of purchase of goods and materials and sale of goods, materials and services, made in pursuance of contracts or arrangements entered in the register (s) maintained under section 301 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956) as aggregating during the year to Rs. 50,000/- (Rupees fifty thousand) or more in respect of each party, have been made at price which are reasonable having regard to prevailing market prices for such goods, materials, or services or the prices at which transactions for similar goods or services have been made with other parties;

(xii) whether any unserviceable or damaged stores, raw materials, or finished goods, are determined and whether provisions for the loss, if any, have been made in the accounts;

(xiii) in case the company has accepted deposits from the public, whether the directives issued by the Reserve Bank of India and the provisions of section 58A of the Companies Act, 1956 and the rules framed thereunder, where applicable, have been complied with. If not, the nature of contraventions should be stated;

- (xiv) is the company maintaining reasonable records for the sale and disposal of realisable by-products and scraps, where applicable;
- (xv) in the case of companies having a paid-up capital exceeding Rs. 25 lakh as at the commencement of the financial year concerned, or having an average annual turnover exceeding Rs. 2 crores for a period of three consecutive financial years immediately preceding the financial year concerned, whether the company has an internal audit system commensurate with its size and nature of its business;
- (xvi) where maintenance of cost records has been prescribed by the Central Government under section 209(1)(d) of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), whether such accounts and records have been made and maintained;
- (xvii) is the company regular in depositing Provident Fund and Employees' State Insurance dues with the appropriate authority and if not, the extent of arrears of Provident Fund and Employees' State Insurance dues shall be indicated by the auditor;
- (xviii) whether any undisputed amounts payable in respect of income tax, wealth tax, sales tax, customs duty and excise duty were outstanding, as at the last day of the financial year concerned, for a period of more than six months from the date they became payable; if so, the amounts of such outstanding dues should be reported;
- (xix) whether personal expenses have been charged to revenue account; if so, the details thereof should be reported;
- (xx) whether the company is a sick industrial company within the meaning of clause (o) of sub-section (1) of section 3 of the Sick Industrial Companies (Special Provisions) Act, 1985 (1 of 1986); if so, whether a reference has been made to the Board for Industrial and Financial Reconstruction under section 15 of that Act;

(B) In the case of a service company :

- (i) all the matters specified in clause (A) to the extent to which they are applicable;
- (ii) whether the company has a reasonable system of recording receipts, issues and consumption of material and stores and allocating materials consumed to the relative jobs, commensurate with its size and nature of its business;
- (iii) whether the company has a reasonable system of allocating manhours utilised to the

relative jobs, commensurate with its size and nature of its business;

- (iv) whether there is a reasonable system of authorisation at proper levels, and an adequate system of internal control commensurate with the size of the company and the nature of its business, on issue of stores and allocation of stores and labour to jobs.

(C) In the case of a trading company :

- (i) all the matters specified in clause (A) to the extent to which they are applicable;
- (ii) have the damaged goods been determined and if the value of such goods is significant, has provision been made for the loss;

(D) In the case of a finance, investment, chit fund, nidhi or mutual benefit company :

- (i) all the matters specified in clause (A) to the extent to which they are applicable;
- (ii) whether adequate documents and records are maintained in a case where the company has granted loans and advances on the basis of security by way of pledge of shares, debentures and other securities;
- (iii) whether the provisions of any special statute applicable to chit fund, nidhi or mutual benefit society have been duly complied with; and
- (iv) if the company is dealing or trading in shares, securities, debentures and other investments, whether proper records have been maintained of the transactions and contracts and whether timely entries have been made therein; also whether the shares, securities, debentures and other investments, have been held by the company in its own name except to the extent of the exemption, if any, granted under section 49 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956).

5. Reason to be stated for unfavourable or qualified answers :

Where, in the Auditor's Report, the answer to any of the questions referred to in paragraph 4 is unfavourable or qualified, the Auditor's Report shall also state the reasons for such unfavourable or qualified answer, as the case may be. Where the auditor is unable to express any opinion in answer to a particular question, his report shall indicate such fact together with the reasons why it is not possible for him to give an answer to such question.

[File No. 12/5/86-CL-V]

S. KUMAR, Member Company Law Board.